• मध्य-पूर्व व् दक्षिण एशिया के सन्दर्भ में अमेरिका की विदेश नीति

- CLASS- M.A.SEM -II POLITICAL SCIENCE
  COURSE TITEL: FOREIGN POLICY OF MAJOR POWERS
  PAPER CODE: MPOLCC-06 (PAPER SIX)

PROF. DEEPTI KUMARI

DEPARTEMNT OF POLITICAL SCIENCE
PATNA UNIVERSITY, PATNA
Email:deeptik.pu@gmail.com

PHONE:0612-2672941S

- अमेरिका विश्व राजनीति की महत्वपूर्ण शक्ति है। अपनी परिष्कृत सैन्य तकनीक, पूंजीगत एवं मानवीय संसाधन एवं आर्थिक प्रगति के कारण उसे यह स्थिति प्राप्त है।

- 1950 के दशक के बाद वैचारिक आधार पर दो खेमों में बंटे विश्व के एक भाग के नेतृत्व कर्ता के कारण उसे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में केन्द्रिय स्थान प्राप्त है

- निम्न क्षमताओं के करण अमेरिका का उत्तरोत्तर विकसित होता रहा है।

- सशक्त आर्थिक
- भौगोलिक
- सामरिक क्षमताओं
- कूटनीति

- 1945 के बाद से अमेरिका ने बड़ी कुशलतापूर्वक विदेशनीति को संचालित किया व् अपनी शक्ति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में स्थापित हो गया।

अमेरिकी विदेश नीति के प्राथमिक लक्ष्य

- परमाणु तकनीक एवं परमाणु शस्त्र नियंत्रण।
- परिष्कृत हथियार तकनीक अप्रसार एवं नियंत्रण।
- आतंकवाद, ईस्लामिक कट्टरता एवं नशीले पदार्थों की तस्करी का उन्मूलन।
- भूमण्डलीकृत खुली उदार अर्थव्यवस्था में निवेश एवं उपभोक्ता बाजार।

❖आतंकवाद एवं ईस्लामिक कट्टरपंथ तथा नशीले पदार्थ का नियंत्रण।

❖क्षेत्र में पाकिस्तान के माध्यम से ईस्लामिक राष्ट्रों पर नियंत्रण।

❖चीन-भारत-पाकिस्तान के गठजोड़ को टालना।

❖मानवाधिकार तथा लोकतंत्र की स्थापना।

- आर्थिक मानक जैसे- विश्व व्यापार संगठन तथा इसके नियम, बौद्धिक सम्पदा एवं अधिकार संरक्षण, श्रम एवं पर्यावरण, आर्थिक प्रतिबंध (सुपर 301, प्रेसलर नियम), बहुराष्ट्रीय कम्पनियां तथा डम्पिंग नियमों के आधार पर स्व आर्थिक हित का पोषण।

- स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मानवाधिकार के आधार पर हस्तक्षेप।

- चुनौती की स्थिति में सैन्य हस्तक्षेप अपने हित अनुसार व्यवस्था की स्थापना (अफगानिस्तान, ईराक तथा सीरिया आदि)

अमेरिकी विदेश नीति के दक्षिण एशिया में मुख्य जोर परमाणु सम्पन्न भारत एवं पाकिस्तान के मध्य निम्न बिन्दुओं पर रहता है:

- परमाणु तकनीक,
- परिष्कृत सैन्य शस्त्र
- तकनीक एवं
- परमाणु युद्ध पर नियंत्रण लगाना है।

विशेषतः तब यह और महत्वपूर्ण है जब कश्मीर जैसे तीव्र मतभेद के मुद्दों के साथ भारत-पाकिस्तान के सम्बन्ध स्थायी गतिरोध के दौर से गुजर रहे हैं।

- क्षेत्र में भारत-पाकिस्तान दोनों के मध्य स्थायी समझौते के द्वारा शांति स्थापित करना अमेरिकी नीति के उद्देश्य हैं।
- पर दोनों राष्ट्रों के भिन्न हितों के कारण अमेरिका किसी के भी साथ कठोर परेशानी की स्थिति में नहीं है।
- वर्तमान में दक्षिण एशिया में अमेरिका भारत और पाकिस्तान दोनों पर दबाव बनाये रखने के लिए दोनों के परस्पर विरोधी मुद्दों पर दोनों राष्ट्रों के भयादोहन क्षेत्र में हितों की पूर्ति हेतु सक्रिय है।

- वस्तुतः अमेरिका अपने समस्त शक्तियों से युक्त होने के कारण अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने में सक्षम है।

- वह सदियों से महाशक्ति के रूप में स्थापित किसी भी चुनौतीके समक्ष डिग कर विश्व राजनीति में अपने अस्तित्व एवं पकड़ को ढ़ीला नहीं करना चाहता।

- शक्ति सम्पन्नता एवं एकधुरवीयता की स्थिति उसे अपने लक्ष्य को पूरा करने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।

खाड़ी युद्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ, प्रमुख यूरोपीय शक्ति एवं विश्व जनमत के विरूद्ध भी आधारविहीन तर्क पर उसने ईराक पर आक्रमण करके वहां अपने हित अनुसार व्यवस्था स्थापित की।

साथ ही, अमेरिकी श्रेष्ठता को चुनौती देने का परिणाम का भी संदेश दिया।

आज कई कारकों विशेषतः के साथ अमेरिका अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय है।

- आतंकवाद,
- परमाणु अप्रसार, शस्त्र नियंत्रण,
- मानवाधिकार,
- लोकतंत्र,
- बालश्रम,
- पर्यावरण तथा
- आर्थिक नियमों

➢एशिया तथा अफ्रिका की खुली अर्थव्यवस्था पर उसकी पकड़ को मजबूत बनाते है।

✓आर्थिक सहायता,
✓अनुदान,
✓निवेश एवं
✓बहुराष्ट्रीय निगमों

➢यह सभी कारक विदेश नीति द्वारा राष्ट्रीय हित साधने के माध्यम हैं और इसे चुनौती देने का परिणाम अमेरिका द्वारा सैन्य हस्तक्षेप के माध्यम से अपने हित अनुसार व्यवस्था की स्थापना है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, ईराक इसके उदाहरण हैं।

!!! धन्यवाद !!!